This question paper contains 4+2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5224**

Unique Paper Code : **205155** **E**

Name of the Paper : **कथा एवं संस्मरण साहित्य**

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi Discipline**

Semester : I

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. प्रेमचन्दोत्तर हिंदी उपन्यास **अथवा** कहानी की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए । 9

2. हिंदी के प्रमुख संस्मरणकारों का संक्षिप्त परिचय दीजिए । 9

अथवा

महादेवी वर्मा के संस्मरणों में मानव जीवन की उदात्तता के चित्र अंकित हुए हैं । समीक्षा कीजिए ।

3. किसी **एक** गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 9

(क) अब तक सजधज, ठाट-बाट और प्रतिष्ठा के एवरेस्ट पर पहुँचे हुए असाधारण जीवन के स्वप्न देखते थे । अब सोचने लगे, फूटे-टूटे मैले, बेहाल, हीन, अपरिचित, अज्ञात और साधारण रहकर ही जीवन की क्यों न पूरी तुष्टि प्राप्त कर ली जाय ? अब उन्होंने अपने मार्ग के किनारे खड़े 'पोष्टों' पर से 'उन्नति' मिटाया और 'उत्सर्ग'

P.T.O.

लिख लिया । अब शेक्सपीयर की नायिका की जगह किसी सकुचाई-सी गँवई-किशोरिका को घर में ले आकर प्रतिष्ठित करना ज्यादा प्रिय लगने लगा, जो अभी जीवन के साथ शिक्षा को और सभ्यता की बहुत-सी व्यर्थताएँ लपेटना न सीखी हो, जो सीधी-सादी, सच्ची, भोली, तिरस्कृता हो, जिसे इनकी आवश्यकता हो और जिसे सुखी बनाकर यह समझें 'हाँ', मैंने कुछ किया ।

अथवा

जैसे मन उसका अस्थिर है वैसे ही उसकी बात भी डगमगाती होती है । दो-टूक कहना नहीं जानता । इस चिट्ठी के बाद भी उसका मन डाँवाडोल है । सोचता है, बाबूजी क्या जवाब देते हैं । जैसे अपना निर्णय वह आप नहीं बनाना चाहता-चाहता है दूसरे उसके लिए निर्णय करके दे दें । मन-भाया निर्णय दूसरे से पाकर वह झट उसे मान लेगा । हमें बिहारी की बात ही ठीक जँचती है । वह दूसरों की ओट चाहता है, जिससे काम का सारा उत्तरदायित्व वह उन पर फेंक दे सके, और खुद अपने सामने अपराधी बनकर खड़े होने से बच जाय ।

('परख' से)

(ख) सचमुच झींगुरों की एकतार आवाज़ पूर्णिमा की उस नीरव रजनी को और भी गंभीर बना रही थी । यों रात डेढ़ पहर से ज्यादा नहीं बीती होगी, परंतु लगता ऐसा था कि निशीथ के क्षण आ पहुँचे । स्निग्ध-शीतल एवं धवल-पांडुर आलोक धरती को दिग्-दिगंत तक उद्भासित कर रहा था । नीचे पृथ्वी, ऊपर आकाश-दीप्त प्रकृति का उदार परिवेश वह क्या था, ग्रीष्मांत की रजनी का सौभाग्य-शृंगार था मानो ·······

अथवा

वह दिन-भर परेशान रहे कि कहीं से चालीस रुपये चाहे जैसे भी मिल जाएँ लेकिन कोई सूरत नहीं निकली । बेटा, वह रुपयों का जमाना तो था नहीं, जिन्सों और मालों का जमाना था । रुपये में तीन-तीन चार-चार मन तक धान मिलते थे; दो-दो ढाई-ढाई मन चावल । सार सेर, छः सेर घी आता था, डेढ़-दो मन गुड़ । कौड़ियाँ पैसों की जगह इस्तेमाल होती थीं । नोट का चलन बिल्कुल नहीं हुआ था ····· आज तो एक बीघा उपजाऊ जमीन ढाई-ढाई तीन-तीन हजार रुपये पर उठती है ! उन दिनों पच्चीस रुपये मिलते थे एक बीघा धनहर खेत के । आज तेरी बस्ती के पचासों आदमी बाहर रुपये कमा रहे हैं । यहाँ के किसान हर साल अनाज बेचकर हजारों की खड़ी रकम बनाते हैं ।

('बाबा बटेसरनाथ' से)

(ग) अपने घर के ऊपर वाले दालानों में चारों ओर सुनहरे-रुपहले पिंजड़ों में रंग-बिरंगे पक्षियों को देखती हुई माधवी मगन-मन डोल रही थी; इस-उस पक्षी को चहकाकर उनकी चहक सुनती थी । सहसा चकवे के बड़े पिंजरे के पास आई, उसके माथे पर बल पड़ गए, दर्पयुक्त स्वर में पुकारा, "नागरत्ना !"

अथवा

कुछ देर बाद ही कक्ष में छाया वेदनाजनित मौन भंग करती हुई चेलम्मा सहसा लड़-खड़ाकर उठी । उसका शरीर मदिरा के वश में था, सँभल न पाया । नागरत्ना ने सहारा दिया । माधवी ने भी और नागरत्ना ने भी यही सोचा था कि चेलम्मा किसी तात्कालिक देह-धर्म की आवश्यकतावश उठी है, परन्तु सँभलकर खड़े होते हुए झूमते स्वर में उसने कहा, "ब····ड़ा सुख पाया····य्या मैंने । अब जाती हूँ । अपनी रूठी अ····म्म····म्मा को सन्तोष दे जाकर ।"

('सुहाग के नूपुर' से)

4. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 15

(*i*) नागार्जुन के उपन्यास 'बाबा बटेसरनाथ' की शिल्पगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए ।

अथवा

'बाबा बटेसरनाथ' के किसी एक प्रमुख पात्र का परिचय दीजिए ।

(*ii*) 'परख' उपन्यास के कथानक की समीक्षा कीजिए ।

अथवा

कट्टो की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए ।

(*iii*) 'सुहाग के नूपुर' की पात्र पेरियनायकी की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए ।

अथवा

'सुहाग के नूपुर' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए ।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8

इस उपदेश के बाद पिताजी ने आशीर्वाद दिया । वंशीधर आज्ञाकारी पुत्र थे । ये बातें हृदय से सुनी और तब घर से चल पड़े । इस विस्तृत संसार में उनके लिए धैर्य ही अपना मित्र, बुद्धि अपनी पथ-प्रदर्शक और आत्मालम्बन ही अपना सहायक था । लेकिन अच्छे शकुन से चले जाते थे, जाते-जाते नमक विभाग के दरोगा के पद पर प्रतिष्ठित हो गए । वेतन अच्छा और ऊपरी का तो ठिकाना ही न था । वृद्ध मुंशी जी को सुख-संवाद मिला तो फूले न समाए । महाजन लोग कुछ नरम पड़े ।

अथवा

इतवार को बुआ आई और पाजेब ले आई । मुन्नी उन्हें पहनकर खुशी के मारे यहाँ-से-वहाँ छुमकती फिरी । रुकमिन के पास गई और कहा–देश रुकमिन, मेरी पाजेब । शीला को भी अपनी पाजेब दिखाई । सब ने पाजेब पहनी देखकर उसे प्यार किया और तारीफ की । सचमुच वह चाँदी की सफेद दो-तीन लड़ियाँ-सी टखनों के चारों ओर लिपटकर, चुपचाप बिछी हुई, ऐसी सुघड़ लगती थीं कि बहुत ही सुघड़ लगती थीं, और बच्ची की खुशी का ठिकाना न था ।

6. यशपाल की 'परदा' कहानी के मूल कथ्य पर विचार कीजिए । 10

अथवा

'पुरस्कार' की मधूलिका का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

7. 'पथ के साथी' में वर्णित जयशंकर प्रसाद के जीवन और साहित्य का परिचय दीजिए । 15

अथवा

'निराला की साहित्य-साधना' के आधार पर निराला की काव्यगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए ।